कोलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत (Kohlberg’s Theory of Moral Development)

लॉरेंस कोलबर्ग (Lawrence Kohlberg) ने जीन्स पियाजे के कार्य का विस्तार करते हुए नैतिक विकास को छह चरणों (Stages) में विभाजित किया। ये छह चरण तीन स्तरों (Levels) में बंटे हुए हैं।

**स्तर 1: पूर्व-परंपरागत नैतिकता (Pre-conventional Level)**

**चरण 1: दंड और आदेश उन्मुखता (Punishment and Obedience Orientation)**

* व्यवहार का निर्णय दंड से बचने के लिए।
* “अगर मैं चोरी करूँगा तो जेल हो जाएगी, इसलिए चोरी नहीं करनी।”

**चरण 2: व्यक्तिगत उपयोग (Instrumental-Relativist Orientation)**

* व्यक्तिगत लाभ या पारस्परिक लेन-देन पर ध्यान।
* “अगर मैं उसकी दवा चुराऊँगा तो मेरी पत्नी ठीक हो जाएगी, और मैं खुश रहूँगा।”

**स्तर 2: परंपरागत नैतिकता (Conventional Level)**

**चरण 3: आपसी संबंध और अनुमोदन उन्मुखता (Good Boy–Nice Girl Orientation)**

* दूसरों की सकारात्मक राय एवं अनुमोदन चाहना।
* “लोग कहेंगे मैं बुरा हूँ अगर मैंने चोरी की।”

**चरण 4: कानून और व्यवस्था उन्मुखता (Law-and-Order Orientation)**

* समाज के नियमों और कानूनों का पालन आवश्यक।
* “चोरी गैरकानूनी है, इसलिए चोरी नहीं करनी चाहिए।”

**स्तर 3: परे-परंपरागत (सामाजिक-अनुबंध) नैतिकता (Post-conventional Level)**

**चरण 5: सामाजिक अनुबंध और सामूहिक उपयोगिता (Social Contract Orientation)**

* कानून, व्यवस्था और समाज की भलाई के लिए लचीलापन।
* “दवा चुराना गलत पर मानवता प्राथमिक है—कुछ नियमों में बदलाव हो सकता है।”

**चरण 6: सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत (Universal Ethical Principles Orientation)**

* सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों—जैसे मानव अधिकार, न्याय—का पालन।
* “जीवन की रक्षा सर्वोपरि है; दवा चुराना नैतिक रूप से सही है, भले कानून के खिलाफ हो।”

**महत्वपूर्ण बिंदु**

1. **क्रमबद्ध विकास**: व्यक्ति एक मोरल स्तर से अगले में क्रम से ही बढ़ता है।
2. **परिपक्वता और सामाजिक अनुभव**: उम्र के साथ परिपक्वता और सामाजिक अनुभव दोनों भूमिका निभाते हैं।
3. **सिद्धांतों का आंतरिकरण**: उच्चतर चरणों में बाहरी दंड-प्रशंसा से स्वतंत्र होकर आंतरिक नैतिकता बनती है।

यह कोलबर्ग का नैतिक विकास का मूल ढाँचा है, जिसका प्रयोग शिक्षा, मनोविज्ञान, नेतृत्व और सामाजिक नीति निर्धारण में होता है।